प्राथमिक स्तर पर परिषदीय एंव अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्याार्थियों की शैक्षिक लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 22.05.2021
स्वीकृतः 15.06.2021

डॉ0 निरंजन कुमार प्रजापति
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग,
वी0 श0 के0 च0 रा0 स्ना0 महा0 डाकपत्थर,
देहरादून
ईमेलः niranjanprajapati7@gmail

सारांश

विद्यालय में विद्यार्थियों के अधिगम हेतु उपयुक्त वातावरण का निर्माण कर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को रोचक क्रिया परक एंव आनन्दमयी बनाने से उनमें शिक्षण एंव अधिगम के प्रति सकारात्मक अभिरूचि को उत्पन्न करके उनकी शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार किया जा सकता है, और परीक्षणों द्वारा उनकी उपलब्धियों का समय–समय पर मापन करना भी आवश्यक हो जाता है। प्राथमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षण संस्थाएं संचालित हो रही हैं और उनमें प्रदान की जाने वाली विभिन्न सुविधाओं में भी अंतर देखने को मिलता है जिसका प्रभाव इन संस्थाओं में अध्यनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर भी पड़ता है और तुलनात्मक दृष्टि से इन संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में भी अन्तर देखने को मिलता है। अतः इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत परिषदीय एंव अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया जिसमें प्राथमिक स्तर के कक्षा 5वीं के विद्यार्थियों की हिन्दी एवं गणित विषय की लब्धि का अध्ययन किया गया जिसमें परिषदीय प्राथमिक विद्यालय एवं अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्याालयों के कुल 600 विधार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में करके ऑकड़े एकत्र किये गये। प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष में पाया गया कि परिषदीय प्राथमिक विद्याालयों एवं अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियो की शैक्षिक लब्धियों में सार्थक अन्तर है।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव के समग्र एवं संतुलित विकास की प्रक्रिया है और प्राथमिक शिक्षा इस सम्पूर्ण प्रक्रिया का आधार है। शिक्षा मनुष्य के बौद्विक एवं भावात्मक विकास का अनवरत प्रयास है, जिसमें उसकी कार्यक्षमता का उचित विकास हो सके और वह संतुलित एवं सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर एक उपयोगी एवं उत्तरदायी व्यक्ति बनकर समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपनी महत्वपूर्ण

भूमिका का निवर्हन कर सके। बालक की शिक्षा में प्राथमिक स्तर की शिक्षा का अपना महत्वपूर्ण स्थान है और यह उसके शैक्षिक जीवन की आधारशिला है। बालक के शैक्षिक विकास के लिए प्राथमिक शिक्षा का दृढ़ होना अति आवश्यक है। प्राथमिक स्तर की शिक्षा बच्चों को सम्प्रेषण के माध्यम से भाषा का ज्ञान कराया जाता है एवं सामान्य मानव व्यवहार हेतु प्रशिक्षित करके उनमें सोचने समझने एवं निर्णय लेने की शक्ति विकसित की जाती है। शिक्षण अधिगम प्रकिया को सुचारू रूप से संचालित करने में विद्यालय में उपयुक्त वातावरण का निर्माण करना अति आवश्यक है, जिससे सीखने सीखने की प्रकिया को रोचक बनाया जा सके और विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रूचि उत्पन्न हो।

विद्यालयों में शिक्षण प्रकिया को सुचारू ढंग से संचालित करने में शिक्षण संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इन संस्थाओं में उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का प्रभाव भी विद्यार्थियों की उपलब्धियों पर पड़ता है। प्राथमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षण संस्थाएं संचालित होती है, जिनमें परिषदीय प्राथमिक विद्यालय सरकार की देखरेख में संचालित होते है तथा अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय प्रबंधतंत्र के माध्यम से कार्य करते है। इस कारण इनमें उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की उपलब्धता एवं कार्य प्रणाली में भी अंतर देखने को मिलता है। परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति, वेतन, भौतिक संसाधनों की उपलब्धता एवं आर्थिक संसाधनों की पूर्ति सरकार द्वारा की जाती वहीं अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विधालयों के खर्चे प्रबंधतंत्र द्वारा स्वयं जुटाये जाते है।

किसी भी शिक्षण संस्था की सफलता का आधार उनमें अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर आधारित होती है। जिस शिक्षा संस्था के विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि अच्छी होती है उसे सफल शिक्षण संस्था का आदर्श माना जाता है। और वह शिक्षण संस्था सभी के आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि समय समय पर विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि का मापन किया जाय, जिससे शिक्षण संस्थाओं की सफलता एवं असफलता एवं उसके प्रमुख कारणों का आंकलन किया जा सके। अतः उक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखकर परिषदीय एवं अन्य अभिकरणों, द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि का तुलानात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया।

उपलब्धि परीक्षण

फ्रीमैन के शब्दों में ''उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है जो एक विशेष या पाठयक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति की समझ, कौशल एवं ज्ञान का मापन करता है।''

लिंडक्विस्ट एवं मन के अनुसार

''एक सामान्य उपलब्धि परीक्षण वह है, जो एक फलांक द्वारा उपलब्धि के किसी दिये हुए क्षेत्र में विद्यार्थी के सापेक्षिक ज्ञान का बोध करायें।''

इबेल

''उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्प है,जों विद्यार्थी के द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान कुशलता या क्षमता का मापन करता है। उपलब्धि परीक्षण का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों की उपलब्धि के सामान्य स्तर का निर्धारण करना,उनकी विभिन्न विषयों एवं कियाओं में वास्तविक स्थिति का आंकलन करना शिक्षण के लिए अभिप्रेरित कर शैक्षिक स्तर को उच्च बनाये रखना होता है।''

अध्ययन का उद्देश्य

परिषदीय एवं अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

विशिष्ट उद्देश्य

1- परिषदीय एवं अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की हिन्दी एवं गणित लब्धि का अध्ययन करना।

2- परिषदीय एवं अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों की 5वीं कक्षा के विद्यार्थियों की हिन्दी लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. परिषदीय एवं अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों की 5वीं कक्षा के विद्यार्थियों की गणित लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1 परिषदीय एवं अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों की हिन्दी लब्धि मे कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2 परिषदीय एवं अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की गणित लब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन

केवल कक्षा 5 के विद्यार्थियों की हिन्दी एवं गणित लब्धि का ही अध्ययन किया गया।

शोध विधि

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श चमन

प्रस्तुत अध्ययन में 15 परिषदीय प्राथमिक विद्यालय एवं 15 अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय का चयन उदेश्यानुसार किया गया। कुल 600 विद्यार्थियों का चयन आकस्मिक विधि से किया गया अर्थात जो छात्र उपस्थिति थे उन्ही की उपलब्धि को ज्ञात किया गया।

उपकरण

अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु हिन्दी एवं गणित लब्धि परीक्षण का निर्माण स्वयं किया गया। परीक्षण की विश्वसनीयता अर्द्ध–विच्छेद विधि द्वारा ज्ञात की गयी।

साख्यिकीय विधियां

अध्ययन मे मध्यमान,मानक विचलन, सहसंबंध गुणाक एवं क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी–1

विद्यार्थियों की हिन्दी लब्धि परीक्षण की तुलनात्मक स्थिति

विद्यालय	**विद्यार्थियों की संख्या**	**मध्यमान**	**प्रामाणिक**	क्रान्तिक अनुपात	**सार्थकता**
परिषदीय प्राथमिक विद्यालय	300	21:15	9.95		.01स्तर पर सार्थक अन्तर
अन्य अभिकरणों					

द्वारा संचालत प्राथमिक विद्यालय	300	29.78	9.85	10.65	

उपरोक्त तालिका स्पष्ट करती है कि परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की हिन्दी लब्धि का प्राप्त मध्यमान (21:15),अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमान (29:78) की अपेक्षा कम है। दोनों अध्ययन समूहों में विद्यार्थियों की हिन्दी शैक्षिक लब्धि में '01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया है।

सारणी–2

विद्यार्थियों की गणित लब्धि परीक्षण की तुलनात्मक स्थिति

विद्यालय	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
परिषदीय प्राथमिक विद्यालय	300	17.80	10.35	9.14	.01स्तर पर सार्थक अन्तर
अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय	300	26.48	12.80		

उपरोक्त तालिका स्पष्ट करती है कि परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की गणित लब्धि का मध्यमान (10:35) अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों की गणित लब्धि मध्यमान (12:80) की अपेक्षा कम है। दोनो अध्ययन समूहों के विधार्थियों की गणित लब्धि में '01स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

निष्कर्ष

उपर्युक्त सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि प्राथमिक स्तर पर परिषदीय एवं अन्य अभिकरणों द्वारा संचालित विद्यालयों के विद्यार्थियों की हिन्दी एवं गणित विषयों की शैक्षिक लब्धि में सार्थक अन्तर है। अतः शोध से सम्बन्धित सभी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है और यह कहा जा सकता है कि परिषदीय एवं अन्य अभिकरणों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में पाया जाने वाला अन्तर सार्थक है।

शैक्षिक महत्व/सुझाव

प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च होना आवश्यक है क्योकि यदि प्राथमिक स्तर पर ही उनकी उपलब्धि के सुधार पर बल दिया जाए तो आगे की शिक्षा में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी होगी। प्राथमिक स्तर पर हिन्दी एवं गणित विषय का ज्ञान आवश्यक माना जाता है क्योकि इस ज्ञान उपयोग बालक के व्यवहारिक जीवन मे सदैव होता रहता है। अतः यह अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थियों की गणित एवं हिन्दी लब्धि का स्तर उच्च हो। परन्तु प्रायः देखा जाता है कि सरकारी विद्यालयों में शिक्षको पर कार्य भार की अधिकता एवं विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति अरूचि के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धियां भी प्रभावित हो रही है। सरकार द्वारा लगातार किये जा रहे प्रयासों के बाद भी कक्षा में छात्र अनुपस्थिति की समस्या अभी

भी बनी हुयी है। शिक्षको की नियुक्ति प्रक्रिया में देरी होने से पर्याप्त संख्या मे प्रशिक्षित शिक्षको का अभाव विधालयों में देखने को मिल रहा है।

अतः यह आवश्यक है कि शैक्षिक उपलब्धियां मे सुधार हेतु पर्याप्त संख्या में प्रशिक्षित अध्यापकों की नियुक्ति की जाय। अध्ययन में रूचि जागृत करने हेतु शिक्षण में मनोवैज्ञानिक प्रणाली को अपनाने पर बल दिया जाए विद्यालय में ऐसा वातावरण तैयार किया जाए जिसमें छात्र–छात्राऐं अध्ययन में रूचि ले सके तथा गणित एवं भाषा जैसे विषयों को आसानी से समझ सकें।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. आर0एल0इबेल (1965) *''मेजरिंग एजूकेशनल एचीवमेंट''* एंगलवुड क्लि एन0जे0पैरेन्टिस हाल। पृ0 –**35**
2. एफ0एन0 फीमैन(1939) *''मेन्टल टेस्ट देयर हिस्ट्री, प्रिन्सीपल्स एण्ड एप्लीकेशन्स''* हाग्टन मिफिन,बोस्टन। पृ0 **490**
3. ई0एफ0 लिडक्विस्ट एण्ड सी0डी मन(1936) *'द कन्सट्रक्शन एण्ड यूज ऑफ एचीवमेन्टएग्जामिनेशन'* मिफिन बोस्टन पृ0 –**23**
4. भटनागर, आर0पी0 ,भटनागर, ए0वी0 (1995) *''शिक्षा अनुसंधान''* इगल बुक इंटरनेशनल मेरठ उ0प्र0।
5. कपिल,एच0के0 (1992) *''सांखिकी के मूल तत्व''* विनोद पुस्तक मंदिर आगरा उ0प्र0।
6. हेनरी,ई0,गैरेट (1993) *''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांखिकी''* कल्याणी पब्लिशर्स लुधियाना, पृ0 **424, 425, 426**